UP Board Class 7 History Notes Chapter 11 जहाँगीर एवं शाहजहाँ

जहाँगीर (1605-1627ई०)

जहांगीर का वास्तविक नाम सलीम था, जिसे बाद में जहांगीर की उपाधि दी गई थी। उसका पूरा नाम मिर्जा नूर-उद-दीन बेग मोहम्मद खान सलीम था। जहाँगीर का जन्म 30 अगस्त ,1569 ई. को हुआ | और वे मुगल शासक अकबर के बड़े बेटे थे अकबर का उत्तराधिकारी सलीम हुआ जो 24 अक्टूबर ,1605 ई. को नसीरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाही गाजी की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठा |

विद्रोह एवं दमन

खुसरो मिर्ज़ा, जहांगीर का ज्येष्ठ पुत्र था. उसने अपने पिता और वर्तमान शासक जहाँगीर के खिलाफ 1606 ईस्वी में विद्रोह कर दिया था. खुसरो मिर्ज़ा, जहांगीर का ज्येष्ठ पुत्र था. उसने अपने पिता और वर्तमान शासक जहाँगीर के खिलाफ 1606 ईस्वी में विद्रोह कर दिया था. उसने अपने दादा जी अकबर को श्रद्धांजलि देने के बहाने आगरा से सिकंदरा बाद 350 घुड़सवारो को लेकर चल दिया था. उसका साथ हुसैन बेग ने दिया और उसके सैनिकों में शामिल हो गया. इस तरह सयुंक्त सेना नें लाहौर की तरफ कूच किया और जहाँगीर के खिलाफ विद्रोह कर दिया और लाहौर के किले की घेराबंदी कर दिया।

जहाँगीर व्यक्तित्व

सम्राट जहाँगीर का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था; किंतु उसका चरित्र बुरी–भली आदतों का अद्‌भुत मिश्रण था। अपने बचपन में कुसंग के कारण वह अनेक बुराईयों के वशीभूत हो गया था। उनमें कामुकता और मदिरा–पान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। गद्दी पर बैठते ही उसने अपनी अनेक बुरी आदतों को छोड़कर अपने को बहुत कुछ सुधार लिया था; किंतु मदिरा–पान को वह अंत समय तक भी नहीं छोड़ सका था।
अतिशय मद्य–सेवन के कारण उसके चरित्र की अनेक अच्छाईयाँ दब गई थीं।
मदिरा–पान के संबंध में उसने स्वयं अपने आत्मचरित में लिखा है–'हमने सोलह वर्ष की आयु से मदिरा पीना आरंभ कर दिया था। प्रतिदिन बीस प्याला तथा कभी–कभी इससे भी अधिक पीते थे। इस कारण हमारी ऐसी अवस्था हो गई कि, यदि एक घड़ी भी न पीते तो हाथ काँपने लगते तथा बैठने की शक्ति नहीं रह जाती थी। हमने निरूपाय होकर इसे कम करना आरंभ कर दिया और छह महीने के समय में बीस प्याले से पाँच प्याले तक पहुँचा दिया।'
जहाँगीर साहित्यप्रेमी था, जो उसको पैतृक देन थी। यद्यपि उसने अकबर की तरह उसके संरक्षण और प्रोत्साहन में विशेष योग नहीं दिया था, तथापि उसका ज्ञान उसे अपने पिता से अधिक था। वह अरबी, फ़ारसी और ब्रजभाषा–हिन्दी का ज्ञाता तथा फ़ारसी का अच्छा लेखक था। उसकी रचना 'तुज़क जहाँगीर' (जहाँगीर का आत्म चरित) उत्कृष्ट संस्मरणात्मक कृति है।
जहाँगीर की मृत्यु बीमारी के कारण 7 नवम्बर, 1627 को हुई थी। उनकी मृत्यु के समय वो कश्मीर से लाहौर जा रहे थे।

जहाँगीर के काल में नूरजहाँ का प्रभाव

नूरजहाँ के बचपन का नाम मेहरुन्निशा था। उसके पिता गियास वेग और माता असमत बेगम (अस्मत) तेहरान (फारस) के निवासी थे। अपने पिता मुहम्मद शरीफ की मृत्यु के बाद नौकरी की तलाश में गियास वेग भारत आया। लेकिन 1578 ई० में कंधार पहुंचने पर उसकी पत्नी ने एक लड़की को जन्म दिया, वह मेहरुन्निशा थी। मलिक मसूद नामक एक व्यापारी के प्रयास से गियास वेग को अकबर के दरबार मे नौकरी मिल गई। 1594 ई० में मेहरुन्निशा का विवाह अली कुली वेग (शेर अफगाना) से सम्पन्न हुआ। 1607 ई० में शेर अफगान की मृत्यु के पश्चात जहाँगीर ने 1611 ई० में मेहरुन्निशा से विवाह कर लिया और उसे नूरजहाँ एवं नूरमहल की उपाधि प्रदान की। विवाह के बाद नूरजहाँ ने नूरजहाँ गट का निर्माण किया। नूरजहाँ शिक्षित एवं तीक्ष्ण बुद्धि की महिला थी। उसे कविता, संगीत और चित्रकला में रुचि थी। उसने एक पुस्तकालय का निर्माण भी करबाया था। जहाँगीर एवं एत्मादुद्दौला का मकबरा उसकी स्थापत्य कला की रुचि को प्रदर्शित करता है। नूरजहाँ को आधुनिक फैशन का आविष्कारक माना जाता है। उसने अनेक निर्धन, गरीब व असहाय कन्याओं का विवाह करवाया था। 1645 ई० में लाहौर में नूरजहाँ की मृत्यु हो गयी।

नूरजहाँ का जब जहाँगीर से विवाह हुआ, उसी समय से उसका प्रभाव बढ़ने लगा। क्योंकि वह असाधारण रुप से सुंदर, शिक्षित, और सुसंस्कृत थी। उसकी प्रतिभा बहुमुखी थी। उसे कविता, चित्रकला में अभिरुचि थी। श्रृंगार प्रसाधन, आभूषणों तथा वस्त्रों में उसकी रुचि परिष्कृत थी। उसमें गहन प्रशासनिक तथा राजनीतिक समस्याओं को समंझने की सहज बुद्धि थी। अतः इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि सम्राट जहाँगीर उसके शक्तिशाली और मोहक प्रभाव में आ गया और उसने उसे शासन करने तथा बादशाहत के प्रतीक धारण करने का भी अधिकार दे दिया था। जहाँगीर स्वयं कहा करता था कि “मुझे तो केवल शराब की एक बोतल और खाने को आधा शेर मांस से अधिक और कुछ नही चाहिए।” वह स्वयं झरोखा से प्रजा को दर्शन दिया करती थी, शासन की तमाम आज्ञाएं उसी के नाम से निकाली जाती थी, ऊँचे-ऊँचे पदाधिकारियो को वही आदेश देती थी, सिक्को पर उसका नाम भी अंकित होता था। इसके अतिरिक्त शाही आदेशो पर बादशाह के साथ उसका भी हस्ताक्षर होता था।

शाहजहां (1628 ई. से 1658 ई.)

शाहजहां के द्वारा दिल्ली के पास शाहजनाबाद नगर स्थापित किया गया। शाहजहाँ का विवाह 1612 ई. में मुमताज महल से हुआ । शाहजहां और मुमताज महल के चार पुत्र और तीन बेटियां थी। पुत्रों के नाम औरंगजेब, मुरादबख्श, दाराशिकोह और शुजा थे। 1631 ई. में मुमताज की मौत के पश्चात शाहजहां ने आगरा में यमुना नदी के किनारे मुमताज की याद में ताजमहल की नींव रखी, जो 1653 ई. में जाकर पूर्ण हुआ था। ताजमहल में ही मुमताज को दफन किया गया था।

https://www.evidyarthi.in/